अध्याय
01

शीत युद्ध का दौर

सीखने के प्रतिफल

इस अध्याय में विद्यार्थी द्वितीय विश्व युद्ध के बाद विश्व स्तर पर जो परिस्थितियां उत्पन्न हुई इसके बारे में जानेंगे तथा विश्व स्तर पर होने वाले गुटबंदी के बारे में भी जान सकेंगे।

शीत युद्ध मानव मस्तिष्क में लड़ा जाने वाला एक युद्ध था। इस युद्ध की शुरुआत 1917 में ही दिखाई पड़ने लगी थी। लेकिन द्वितीय विश्व युद्ध में परमाणु बम का प्रयोग विश्व की राजनीति में एक आतंकी संतुलन का रूप ले चुका था, यहीं से शीत युद्ध का विकास शुरू हुआ।

डॉक्टर एमएम राजन के शब्दों में – "शीत युद्ध शक्ति संघर्ष की राजनीति का मिलाजुला परिणाम है। दो प्रकार के परस्पर विरोधी पद्धतियों का परिणाम। जिस का अनुपात समय और परिस्थितियों के अनुसार एक दूसरे के पूरक के रूप में बदलता रहता है।"

जवाहरलाल नेहरू के अनुसार – शीत युद्ध पुरातन शक्ति संतुलन की अवधारणा का नया रूप है। यह विचारों का संघर्ष ना होकर दो शक्तिशाली देशों का आपसी संघर्ष है।

लुई हाले के अनुसार – शीत युद्ध परमाणु युग में एक ऐसी स्थिति है जो शस्त्र युद्ध से एकदम भिन्न किंतु अधिक भयानक युद्ध है। जो अंतर्राष्ट्रीय समस्या के समाधान के स्थान पर उन्हें उलझा दिया । चाहे वियतनाम, कश्मीर, कोरिया अथवा अरब इजरायल संघर्ष । शीत युद्ध के मोहरें की तरह प्रयुक्त किए जाते रहे।

एस एन धर के अनुसार शीत युद्ध द्वितीय विश्व युद्ध के बाद अमेरिका एवं रूस के बीच क्रमशः कटु संबंधों को कहा जाता है । जिसके कारण दोनों राष्ट्र परस्पर प्रतिद्वंदी बनकर तीसरे विश्वयुद्ध के लिए तत्पर हो गए थे। शीत युद्ध का क्षेत्र मानव मस्तिष्क था।

© JCERT not to be republished

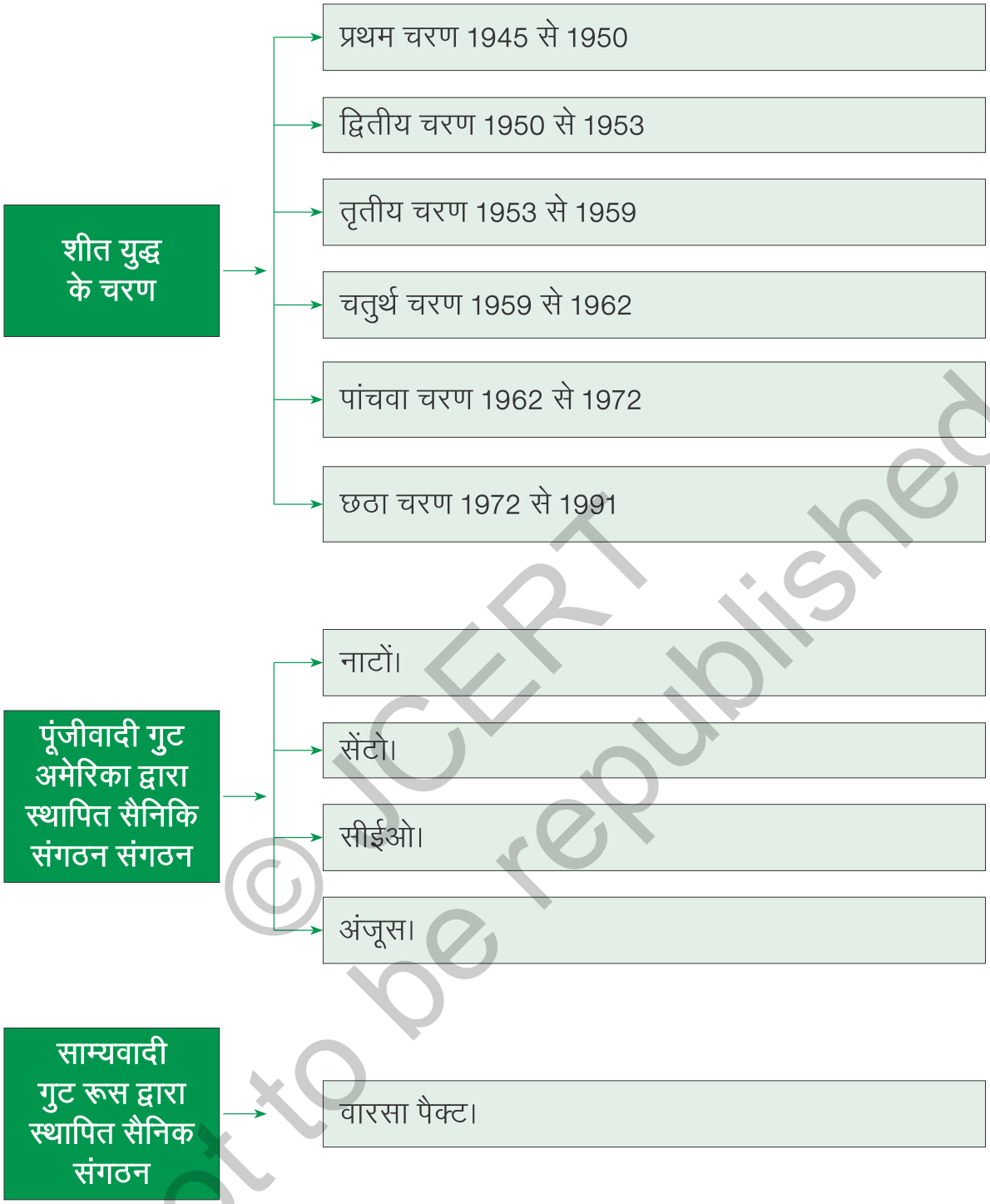

© JCERT not to be republished

शीत युद्ध के कारण

- साम्यवादी और पूंजीवादी विचारधाराओं का प्रसार।
- रूस द्वारा याल्टा सम्मेलन का पालन करने से इनकार।
- सोवियत संघ का शक्तिशाली होकर उभरना अमेरिका को बर्दाश्त नहीं हो पाया।
- अमेरिका और रूस द्वारा अपने वैचारिक मतभेद को विश्व स्तर तक ले जाना।
- सोवियत संघ द्वारा बिना जरूरत का इरान में हस्तक्षेप करना।
- द्वितीय मोर्चे संबंधी विवाद को बढ़ावा देना।
- अमेरिका द्वारा अपना परमाणु कार्यक्रम को सोवियत संघ से छुपाए रखना।
- दोनों गुटों द्वारा विश्व स्तर पर परस्पर विरोधी प्रचार करना।
- बर्लिन विवाद।
- तुष्टिकरण की नीति।
- हथियारों का होड़।
- क्यूबा मिसाइल संकट।
- अमेरिका द्वारा फासीवादी शक्तियों को मदद पहुंचाना।
- सोवियत संघ द्वारा संयुक्त राष्ट्र संघ में वीटो पावर का बार बार प्रयोग किया जाना।
- लैंड लीज समझौते का समापन।

© JCERT not to be republished

अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में शीत युद्ध का प्रभाव

- विश्व की सभी समस्याओं को गुटी स्वार्थ पर ही परखा जाने लगा
- विश्व में आतंक और भय का वातावरण बना रहा
- संयुक्त राष्ट्र संघ की भूमिका में कमी आई
- वीटो शक्ति का बार बार प्रयोग किया जाने लगा
- शीत युद्ध ने विश्व स्तर पर शांति संतुलन के स्थान पर आतंक के संतुलन को जन्म दिया
- अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर परोक्ष युद्ध की भरमार हो गई
- विश्व के बहुत से विकासशील एवं और विकसित देशों की अर्थव्यवस्था पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा
- विश्व स्तर पर राजनीति में कूटनीति एवं प्रचार के महत्व को समझा जाने लगा
- विश्व के अनेक देशों में आतंकवाद का प्रसार हुआ
- राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन को बल मिला
- गुटनिरपेक्ष आंदोलन को सफल आधार मिला
- विश्व स्तर पर नव उपनिवेशवाद का जन्म हुआ

© JCERT not to be republished

गुटनिरपेक्ष आंदोलन

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद विश्व दो गुटों में विभक्त हो गया था इस समय नव स्वतंत्र राष्ट्र के एक समूह द्वारा दोनों गुटों में न शामिल होते हुए एक तीसरा गुटनिरपेक्ष आंदोलन को जन्म दिया। गुट निरपेक्ष आंदोलन का पहला सम्मेलन 1 सितंबर 1961 ईस्वी को बेलग्रेड में संपन्न हुआ जिसमें 25 देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस सम्मेलन में ही गुटनिरपेक्षता को औपचारिक स्वरूप प्रदान किया गया

गुटनिरपेक्ष आंदोलन की शर्तें

- शीत युद्ध के प्रसंग में एक स्वतंत्र विदेश नीति अपनाना
- नव उपनिवेशवाद के सभी रूपों का विरोध करना
- किसी विषय में किसी गुट का सदस्य ना होना
- दोनों महा शक्तियों के बीच किसी के साथ द्विपक्षीय संधि नहीं करना
- किसी भी महाशक्ति को अपने देश में सैन्य अड्डा स्थापित करने की अनुमति नहीं देना

गुटनिरपेक्ष आंदोलन के कार्य

- शीत युद्ध का विरोध करना
- स्वतंत्र विदेश नीति को अपनाना
- राष्ट्रवाद एवं राष्ट्रीय हित में कार्य करना
- विकास के कार्यों को प्रोत्साहन देना
- विश्व राजनीति में निष्पक्ष की भूमिका का निर्वाह
- सैनिक गुटों का विरोध करना
- युद्ध की स्थिति को टालने का प्रयास करना

© JCERT not to be republished

महत्वपूर्ण संगठन के नाम

- यूरोपीय आर्थिक सहयोग संगठन 1948 ईस्वी
- नाटो 1949 ईसवी
- यूरोपीय परिषद 1961 ईस्वी
- यूरोपीय आर्थिक समुदाय 1973 ईस्वी
- बेनिलक्स 1944 ईस्वी
- यूरोपी कोयला एवं इस्पात समुदाय 1951 ईस्वी
- मार्शल योजना 1948
- कौमी फॉर्म 947 ईस्वी
- वारसा पैक्ट 1955 ईस्वी

महत्वपूर्ण तथ्य

- ट्रूमैन सिद्धांत 12 मार्च 1947
- स्वेज नहर का राष्ट्रीयकरण 1956 ईस्वी
- बर्लिन संकट 1962 ईस्वी
- क्यूबा संकट 1952 ईस्वी
- 1957 ईस्वी मैं आइजनहाइवर सिद्धांत ने युद्ध को उग्र कर दिया
- अमेरिका द्वारा आर्थिक सहायता की नीति को सोवियत संघ ने डॉलर साम्राज्यवाद की संज्ञा दी
- शीत युद्ध का सबसे महत्वपूर्ण प्रतीक था बर्लिन का दीवार
- स्टालिन की मृत्यु 1953 में हो गई
- 1947 ईस्वी में अमेरिका ने तुर्की व यूरोपीय सरकार को आर्थिक सहायता देने की घोषणा की
- शीत युद्ध की निंव 1917 ईस्वी में ही पड़ गई थी

© JCERT not to be republished

भारत और शीत युद्ध

- भारत ने दोनों टीमों से अपने को सजग रूप से अलग रखा
- भारत ने दो दोनों महाशक्ति के उपनिवेशवाद के चंगुल से मुक्त हुए देशों को एक प्लेटफार्म देने का काम किया
- भारत में विश्व स्तर पर दोनों गुटों के बीच मौजूदा मतभेद को कम करने की कोशिश की
- भारत शीत युद्ध के काल में 2 प्रतिनिधि देशों के बीच संवाद कायम करने में लगा रहा
- भारत हमेशा इस स्थिति में रहा कि एक महाशक्ति दूर होगी तो दूसरा उसके नजदीक होने लगती है
- भारत शीत युद्ध के दौरान क्षेत्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संगठनों को सक्रिय बनाए रखा जो दोनों गुटों में शामिल नहीं था
- विकसित देशों के जोरदार विरोध के बावजूद भी गुटनिरपेक्षता देशों के बीच एकता बनाए रखने में सफल रहा

© JCERT not to be republished

विकल्प प्रश्न उत्तर

1- सोवियत संघ द्वारा पहला परमाणु परीक्षण कब किया गया?

a. 1949 **b.** 1945

c- 1953 **d.** 1942

2- यूरोपीय आर्थिक सहयोग संगठन की स्थापना कब हुई थी?

a. 1945 **b.** 1948

c. 1955 **d.** 1951

3- शीत युद्ध के समय पूंजीवादी गुटका नियंत्रण किसके हाथों में था?

a. सोवियत संघ **b.** अमेरिका

c. चीन **d.** भारत

4- सोवियत संघ का विघटन कब हुआ?

a. 1945 **b.** 1991

c. 1949 **d.** 1953

5- मार्शल योजना कब लागू की गई थी?

a. 1949 **b.** 1947

c. 1953 **d.** 1991

लघु उत्तरीय प्रश्न

1- ट्रूमैन सिद्धांत का वर्णन कीजिए?

2- अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में शीत युद्ध के प्रभाव का वर्णन कीजिए?

3- गुटनिरपेक्ष आंदोलन से आप क्या समझते हैं?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1- शीत युद्ध के कारणों का वर्णन कीजिए?

2- शीत युद्ध के समय अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में गुटनिरपेक्ष आंदोलन की भूमिका का वर्णन कीजिए?

© JCERT not to be republished